सं. श्रो. वि.एफडी/69-87/28526.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० हाईपोलीमर लेबस प्लाट नं० 8, सैक्टर 25, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री श्री रतन पाल सिंह मार्फत सी ५, २/७, गोपी कालोनी, श्रोल्ड फरीदाबाद तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा ग्रिधिनियम की धारा 7-क के ग्रिधीन गठित ग्रौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्याय निर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं।

क्या श्री रतन पाल . सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

सं. ओ. वि. एफ.डी/69-87/28533.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० हाईपोलीमर लेब्स, प्लाट मं० 8, सैक्टर 25, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री हरबीर सिंह मार्फत सीटू, 2/7, गोपी कालोनी, श्रोल्ड फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, ग्रोद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7-क के ग्रिधीन गठित ग्रीद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्याय निर्णय एवं पचाट 3 मास में देने हेतु, निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री हरबीर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि. हिसार/84-87/28540 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) मुख्य प्रशासक, हरियाणा राज्य एग्रीकल्चरल मार्कीटिंग बोर्ड, पचकूला, (2) चेयरमैन, मार्किट कमेटी, श्रादमपुर मण्डी, जि० हिसार के श्रीमक श्री राजेन्द्र प्रसाद, पुत्न श्री मोहन लाल द्वारा मजदूर एकता यूनियन नागोरी गेट हिसार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना स. 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवरबर, 1970 के साथ पटित सरकारी श्रिष्टियम के की धारा 7 के श्रिधीन गटित श्रम व्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे जसुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा मम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री राजेन्द्र प्रसाद प्याऊमैन की सेवा समाप्ति/छांटी न्यायोचित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो वि हिसार/88-87/28549 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) मुख्य प्रशासक, हरियाणा राज्य एग्रीकल्चरल मार्कीटिंग बोर्ड, पंचकूला (ग्रम्बाला), (2) चेयरमैन, मार्कीट कमेटी, ग्रादमपुर मण्डी (हिसार) के श्रमिक श्री योग राज, पुत्र श्री भले राम द्वारा मजदूर एकता यूनियन नागोरी गेट हिसार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विदाद है ;

ग्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्धिदेष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिये, स्रब, स्रौद्योगिक विवाद स्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की

ाई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ऋधिसूचना सं∘ 9641−1−श्रम 78/32573, दिनांक
6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधिनियम की धारा 7 के स्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादगस्त
या उससे सुसंगत या उसके से सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं
जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत स्थवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री योगराज, माली की सेवा समाप्ति न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस <mark>राहत का</mark> हकदार है ?

सं. स्रो. वि. हिसार/87-87/28553.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) प्रबन्धक निदेशक, हरियाणा लघ सिंचाई ट्यूबर्वेल निगन लि०, चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी अभियन्ता, हरियाणा लघु सिंचाई ट्यूबर्वेल निगम लि०, टोहाना लाईनिंग डिविजन नं० 1, टोहाना (हिसार) के श्रमिक श्री बलवान सिंह, पूत्र श्री भलिया राम मार्फत मजदूर एकता यूनियन, नागोरी गेट, हिसार तथा उस के प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई स्रौद्योगिक विवाद है:

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधिनियम की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवाद- ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है ।

क्या श्री बलवान सिंह की सेवा समाप्ति /छांटी न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो. वि. एफाडी/62-87/28558--चूिक हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० माईक्रोब लेक्कोटरीज, 13, इण्डस्ट्री-यल एरिया, फरीदावाद, के श्रमिक श्री दया राम मार्फत श्री ग्रमर सिंह शर्मा, एस एस ग्राई. प्लाट नं० 1के/14, एन ग्राई. टी., फरीदाबाद तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इसलिये, श्रवः, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हेरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7क के श्रिधीन गठितु श्रौद्योगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अयवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्याय निर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री दया राम की सेवा समाप्ति न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ओ वि. एफडी/गुड़गांव/113-87/28565.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि प्रबन्धक निवेशक, दी महेन्द्रगढ़ सैन्ट्रल कोप्रापरेटिव बैंक लि० महेन्द्रगढ़ के श्रामिक श्रो सोता राम, पुत्र श्री मान सिंह, गांव पतिकरा, डा० नारनौल तह० नारनौल, जिला महेन्द्रगढ़ तथा प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है :

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रुधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 क के ग्रिधीन गठित ग्रीद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री सीता रामं की <mark>सेवा</mark> समाप्ति न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं. तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. स्रो. वि. एफ.डी. 163-87/28572 — चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं विकटर केंबल्ज लिं , 14/1, मथुरा रोड़ फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री लेख चन्द यादव, मार्फत सूरजबली यादव, गोल्डन पोलिस्टर इण्डस्ट्रीज, 14, माईल स्टोन, मथुरा रोड़, फरीदाबाद तथा प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

अौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के के ग्रिधीन गठित ग्रौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिकों के बीच या तो विवादगुस्त मामला/मामले हैं ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पचाट 3 मास में देने हैंतु निर्दिष्ट करते हैं

क्या श्री लेख चन्द यादव की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं स्रो वि. एफ.डी./59-87/28579.—बू िक हरियाणा के राज्यपाल की राये है िक मैं० जैन स्टील्ज, 13/ए०, नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम नरायण मार्फत श्री रोशन लाल शर्मा, प्रधान जनरल इन्जीनियरिंग वर्करज यूनियन, 1 के/16, एन. ग्राई टी., फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामुले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समूझते हैं ;

इस लिये, अब, अोबोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) हारा प्रदान की गई मिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के हारा उक्त अधिनियम की धारा 7 क के अधीन गठित औद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त सामजा/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्याय-निर्णय एवं जंबाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री राम नरायण की सेवा समाप्ति न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह कि किस राहत का हकदार है ?

सूं म्रो. वि. एफ.डी. 47-86 28586 चूं कि हिर्याणा के राज्यपाल की राये है कि मैं अकाश एम्रो इण्डस्ट्रीज, प्लाट नं 311, सैक्टर 24, फरोदाबाद, के श्रमिक श्री रामम्बद्ध, पुत्र श्री महादेव मार्फत भारतीय मजदूर संध नीलम बाटा रोड़, फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई म्रोद्योगिक विवाद है, ;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इस लिए, अब अौद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई मक्तियों का प्रयोग करते हुरियणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के के अधीन गठित आद्योगिक ग्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवावदग्रस्त मामला/ मामले है ग्रयबा विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले है न्याय निर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते है:—

> क्या श्री राम श्रवध की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर हाजिर होकर नौकरी से लियन खोया है ? इस विन्दु पर निर्णय के फलस्वरुप वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो. वि. एफ.डी. 145-87 28601. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० साहनी सिल्क मिल, मंधुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री मनी राम, मार्फत जनरल सैकेंट्री टैक्सटाईल एण्ड एम्ब्रोडरी वर्कस (रिज.), एन श्राई. टी., फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीचोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए अन, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के के अधीन गठित औद्योगिक अधिकरण, हरियाणा. फरीदाबाद की नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं ज्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री मनी राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं. ग्रो. वि. एफ.डी. 149-87 | 28608. → चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० शर्मा इंजीनियरिंग वर्कस, प्लाट नं० 46, ग्रोल्ड फरीदाबाद, के श्रमिक श्रो विजय पाल सिंह, पुत्रं श्री हरपाल सिंह, मार्फत हिन्द मंजदूर सभा, 29, शहीद चीक, फरीदाबाद तथाँ श्वन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है ;

श्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछ्नीय समझते हैं ;

इस लिए ग्रव, ग्रांबोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के के ग्रधीन गठित ग्रांबोगिक ग्रधिकरण हरियाणा, फरीदावाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं ग्रथवा. विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री विजय पाल सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो, वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो. वि. एफ. डी./गुड़गांव/120-87/28615.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं॰ महा लक्ष्मी इस्पात प्राईवेट लिमिटिड, दौलताबाद रोड़, गुड़गांव, के श्रीमक श्री कंवर सिंह मार्फत श्री धर्म सिंह सचिव, भारतीय मजदूर संघ, मुनीम मार्किट, सदर बाजार, गुड़गांव तथा प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के वाद लिखित मार्मले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हे तू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घं) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त श्रधिनयम की धारा 7 के के श्रधीन गठित श्रौद्यगिक श्रधिकरण हरियाणा, फरीदावाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं श्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्याय निर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतू निदिष्ट करते हैं: —

क्या श्री कंबर सिंह की सेवा प्रवन्धकों द्वारा समापन की गई है या उसने स्वयं चूकती में हिसाब लेकर नौकरी छोड़ी है? इस बिन्दू पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का इकदार है ?